मॉस्को-रशिया। ब्रह्माकुमारीज़ के मायक मीरा,लाइट हाउस ऑफ द वर्ल्ड रिट्रीट सेंटर द्वारा 'ग्लोबल सिनारियो एंड द फ्यूचर ऑफ ह्युमैनिटी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. सुदेश तथा ब्र.कु. जयन्ती। सभा में शहर के गणमान्य लोग।

पुखरायाँ-उ.प्र.। विधायक विनोद कटियार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता।

कथा सरिता

ईश्वर से संपर्क कैसे हो...

एक व्यक्ति को जानकारी हुई कि गंगा किनारे के एक संत के पास एक पारसमणि है, सो उसे पाने की लालसा में वह संत के पास गया और अपनी इच्छा कही। संत ने कहा कि अच्छा है जो तुम ले जाओगे वैसे भी यह हमारे किसी काम की नहीं। व्यक्ति प्रसन्न हो उठा। संत ने कहा कि जाओ, कुटिया के छप्पर पर एक लोहे की संदूकची है, उसे ले आओ। व्यक्ति को कुछ आश्चर्य हुआ परन्तु छप्पर पर चढ़कर वह छोटी सी संदूकची उठा लाया। क्या इसमें पारसमणि है? क्या यह पारसमणि असली है? यदि असली है तो संदूकची सोने की क्यों न हुई? जब न रहा गया तो संत से पूछ ही लिया कि संदूकची में पारसमणि होने पर भी यह सोने की क्यों न हुई? संत ने उसके सामने ही संदूकची को खोला। पारसमणि एक गुदड़ी में लिपटी हुई रखी थी। आवरण में होने के कारण ही लोहे की संदूकची सोने की न हुई। एक साथ होने पर भी एक दूसरे का स्पर्श न हो सका और स्पर्श न होने के कारण दोनों का स्वरूप भी अलग-अलग ही बना रहा।

ठीक इसी प्रकार ईश्वर और जीव दोनों ही हृदय में एक ही साथ रहते हैं परन्तु दोनों के बीच वासना का पर्दा होने के कारण दोनों का मिलन नहीं हो पाता। जीवात्मा लोहे की संदूकची है और ईश्वर पारसमणि। जब तक जीव का अहम और ममता रूपी चिथड़ा न हटे तब तक ईश्वर से संपर्क कैसे हो। परमात्मा से प्रेम करना है, मिलना है, तो विषयों का प्रेम छोड़ना ही होगा। जो अत्यधिक निकट है, उसे न देख कहाँ खोज रहे हो? जहाँ हो, वहीं बैठ जाओ। भटकाव का समय नहीं है। बहुत समय व्यर्थ ही व्यतीत हो गया। न जाने अब कितनी श्वासें शेष हैं? अगला ही क्षण कहीं अंतिम न हो! प्रियतम तो प्रेम भरी दृष्टि से निहार ही रहे हैं कि कब यह मेरी ओर देखे। और हम संसार के दृश्यों में आनन्द लेते हुए प्रियतम को खोज रहे हैं! वो जहाँ हैं वहाँ न खोजा। वे भी इतने निकट छुपते हैं, जहाँ हमें संदेह भी नहीं होता और इसी कारण मिलन में देरी हो जाती है। प्राण और प्रियतम! प्रियतम हैं तो प्राण है और जब तक प्राण है, वह प्रियतम मेरे पास ही हैं!!

केवल एक दिन का पुण्य क्यों?

एकादशी से अगले दिन एक भिखारी एक सज्जन की दुकान पर भीख मांगने पहुंचा। सज्जन व्यक्ति ने एक रुपये का सिक्का निकालकर उसे दे दिया। भिखारी को प्यास भी लगी थी, वो बोला बाबूजी एक गिलास पानी भी पिलवा दो, गला सूखा जा रहा है। सज्जन व्यक्ति गुस्से में, तुम्हारे बाप के नौकर बैठे हैं क्या हम यहाँ, पहले पैसे, अब पानी, थोड़ी देर में रोटी मांगेगा, चल भाग यहाँ से।

भिखारी बोला : बाबूजी गुस्सा मत कीजिए। मैं आगे कहीं पानी पी लूंगा, पर जहाँ तक मुझे याद है, कल इसी दुकान के बाहर मीठे पानी की छबील लगी थी और आप स्वयं लोगों को रोक-रोक कर ज़बरदस्ती अपने हाथों से गिलास पकड़ा रहे थे, मुझे भी कल आपके हाथों से दो गिलास शर्बत पीने को मिला था, मैंने तो यही सोचा था आप बड़े धर्मात्मा आदमी हैं, पर आज मेरा भ्रम टूट गया। कल की छबील तो शायद आपने लोगों को दिखाने के लिए लगाई थी। मुझे आज आपने कड़वे वचन बोलकर अपना कल का सारा पुण्य खो दिया। मुझे माफ करना अगर मैं कुछ ज़्यादा बोल गया हूँ तो....।

सज्जन को बात दिल पर लगी, उसकी नज़रों के सामने बीते दिन का प्रत्येक दृश्य घूम गया। उसे अपनी गलती का अहसास हो रहा था। वह स्वयं अपनी गद्दी से उठा और अपने हाथों से गिलास में पानी भरकर उस भिखारी को देते हुए उससे क्षमा प्रार्थना करने लगा।

भिखारी : बाबू जी मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं, परन्तु अगर मानवता को अपने मन की गहराइयों में नहीं बसा सकते, तो एक दो दिन किये हुए पुण्य व्यर्थ हैं। मानवता का मतलब तो हमेशा शालीनता से मानव व जीव की सेवा करना है। आपको अपनी गलती का अहसास हुआ है। ये आपके व आपकी सन्तानों के लिए अच्छी बात है। आप व आपका परिवार हमेशा स्वस्थ व दीर्घायु बना रहे, ऐसी मैं कामना करता हूँ, यह कहते हुए भिखारी आगे बढ़ गया।

सेठ ने तुरंत अपने बेटे को आदेश देते हुए कहा : कल से दो घड़े पानी दुकान के आगे आने-जाने वालों के लिए ज़रूर रखे हों। उसे अपनी गलती सुधारने पर बड़ी खुशी हो रही थी।

मनाली-हि.प्र.। जी.आर.ई.एफ.एफ.(38बी.आर.टी.एफ.) के लेफ्टिनेंट कर्नल सेकेण्ड कमांडिंग इंचार्ज जयपाल सिंह व अन्य अधिकारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु. ऋताम्भरा तथा अन्य।

जयपुर-कमला अपार्टमेंट। एच.पी.सी.एल. के ऑफिसर्स को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. स्वाती, एच.पी.सी.एल. के ट्रेनिंग मैनेजर अमरनाथ सिखपुड़ा तथा स्टाफ।

सम्बलपुर-ओडिशा। सेवाकेन्द्र पर आयोजित जन्माष्टमी कार्यक्रम में नवीन पटनायक,ब्रान्च मैनेजर,स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,बनहारपली ब्रान्च को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिन्दु।

नेपाल-विराटनगर। आंतरिक मामला तथा कानून मंत्री हिक्मत कार्की को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रेनू। साथ हैं ब्र.कु. तुलसी।

दिल्ली-मजलिस-पार्क। सांसद उदित राज को राखी बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

निम्बाहेड़ा-चितौड़गढ़। यू.डी.एच. मिनिस्टर श्रीचंद कृपलानी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शिवाली।

कानपुर-किदवई नगर(उ.प्र.)। विधायक महेश त्रिवेदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आरती।

दिल्ली-इन्दरपुरी। राजेन्द्र नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बाला। साथ हैं ब्र.कु. अभिनव।

छता-कोसीकलाँ(उ.प्र.)। नगर पालिका अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योत्सना।

सुजानगढ़-राज.। विधायक खेमाराम मेघवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुप्रभा।

झिंझक-उ.प्र.। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के मैनेजर एस. शुक्ला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीना।

चरखी दादरी-हरियाणा। द्रोणाचार्य अवॉर्ड से सम्मानित महावीर फोगाट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रेमलता।

फरीदाबाद-हरियाणा। सर्वोदया हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. राकेश गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निरूपम।